ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, *RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14, Vol.-I, No.-1,* **PP-132-133**, *YEAR 2014*

भारतीय समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव
(मध्यकालीन सांस्कृतिक संक्रमण के परिप्रेक्ष्य में)

❑ डॉ0 अमित कुमार सिंह*

वर्तमान समाज में, नारी अस्मिता से जुड़े कुछ मुद्दे अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गए हैं क्योंकि सम्पूर्ण सामाजिक परिप्रेक्ष्य, भूमण्डलीकरण के दौर में बदलाव और रूपान्तरण के दौर से गुजर रहा है। औद्योगिक उत्पादन के विश्वव्यापी विस्तार और तद्नुरूप बाजार की उपलब्धता ने संरचनात्मक वैभिन्नीकरण तथा व्यावहारात्मक परिवर्तनों के लिए जरूरी एक नए सामाजिक परिवेश का सृजन किया है। एक ओर नए मूल्यों और आदर्शों का मनोवैज्ञानिक धरातल उभर कर सामने आया है तो वहीं, दूसरी ओर, नयी प्रत्याशाओं और महत्त्वाकांक्षाओं ने संरचनात्मक विस्तार और सामाजिक गतिशीलता के नए आयाम परिलक्षित हो रहे हैं। नारी की अस्मिता अभूतपूर्व बदलाव के इन प्रतिकारकों से अछूती नहीं रह सकती। उसमें परिवेशीय चुनौतियों का सामना करने के एि नयी चेतना का संचार हुआ है और खुले आकाश में पंख फड़फड़ाने को आतुर उसने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के जरिए अपने सार्मथ्य, शाहस और संकल्प की नयी कथा लिखना शुरू किया है। अतः भूमण्डलीकरण के दौर में औरत की अस्मिता से जुड़े मुद्दों की एक समाजशास्त्रीय विवेचना समय का तकाजा है ताकि उसके सन्दर्भ में परिवर्तनशील परिवेशीय तत्त्वों पर यथेष्ट प्रभाव पड़ सके।

वर्तमान दौर में स्त्री के सबलीकरण और अबलीकरण दोनों ही प्रक्रियाएं एक साथ चल रही हैं। खुली अर्थव्यवस्था में वह उत्पीड़ित है तो एक सक्रिय एजेण्ट भी। नए बाजार में स्त्री के कौन सी नयी राहें मिली हैं और किन क्षेत्रों में उसकी स्थिति बदत्तर हुयी, इसे समझना जरूरी है। सच पूछा जाय तो सबलीकरण और अबलीकरण के दायरों का बंटवारा सरल विभाजनों से नहीं हो सकता। जहां हमें सबलीकरण दिखता है, वहां स्त्रियों की अन्तर्कथाएं, उनकी पुरानी भूमिकाओं की टकराहट तथा परम्पराओं के नवसृजित रूपों में फैली स्त्री के द्वन्द्व इस सबलीकरण व अबलीकरण की द्विधा से हट कर आज की स्त्री की स्थिति को समझने की मांग करते हैं। सारी दुनिया में स्त्री के जीवन पर भूमण्डलीकरण के प्रभाव बहुमुखी, लेकिन विरोधाभासी हैं। राष्ट्र बनाम भूमण्डलीकरण या फिर बाजार बनाम समाज जैसे सरलीकरणों पर सवार होकर स्त्री की आजादी के सरोकार इन प्रभावों का आकलन नहीं कर सकते। अतः भूमण्डलीकरण के खिलाफ एक तरफा फैसला देना जल्दबाजी होगी। स्त्री जीवन ने वर्तमान समाज में नयी भूमिकाओं के दर्शन किए हैं और इनके कारण स्त्री शक्ति में वृद्धि भी हुयी है, लेकिन, स्त्री को नयी विशमताओं और असुरक्षा का सामना भी करना पड़ रहा है। कुछ के लिए यह परिवर्तन वरदान के रूप में है तो बहुतेरों के लिए हॉनिकारक साबित हुआ है।

श्रम तथा उत्पादन के क्षेत्र में स्त्रियों की विषम तथा विरोधाभासी स्थितियों की विवेचना वांछनीय प्रतीत होती है। नयी तकनीकों की जानकारी से स्त्रियों का वंचित रहना, श्रम की बढ़ती गतिशीलता के कारण स्त्रियों का अपने सामाजिक परिवेश से अलग–थलग पड़ जाना, अप्रतिबद्ध पूंजी पर निर्भर श्रम का अधिक शोषण होना तथा स्थापित ढांचों को तोड़ कर पुरूष श्रमिकों से बराबरी करने की असमर्थता इत्यादि बिन्दुओं की विवेचना आवश्यक है। उदाहरणार्थ 45 वर्षीय स्त्री श्रमिक जो बीस साल से कामीजों के कॉलर सिलती रही या कट पाकेट बनाती रही, कम्प्यूटर मशीन से डरती है, उस मशीन को चलाने में खुद को असमर्थ पाती है और उसकी जगह एक शिक्षित नौजवान ले लेता है। दूसरी ओर एक

*प्रवक्ता–आधुनिक/मध्य इतिहास माँ कस्तूरी देवी महाविद्यालय, नवानगर, बलिया, उ0प्र0

अन्य स्त्री श्रमिक उस मशीन को चलाना सीख गयी तो पुरूषवादी सोच ने उसे वहां टिकने नहीं दिया। धीमा उत्पादन, कमरतोड़ मेहनत और कम आमदनी वाला काम हो तो स्त्रियों का श्रम और सुगम तकनीक से कम समय में अधिक, उत्पादन का काम हो तो स्त्री श्रमिक के वही दो हाथ निष्काम हो जाते हैं, क्योंकि मंहगी मशीनों पर लड़कियों के बैठने की मनाही है। अतः विकास के नाम पर विस्थापित स्त्री तथा मूल्यविहीन परतु अथक श्रम से जूझती स्त्री की पीड़ा को अभिव्यक्ति की जरूरत है।

वैश्वीकरण के स्वतंत्र बाजार का एक बड़ा हिस्सा और उपकरण मीडिया है। विज्ञापनों की हवा पर सवार होकर उपभोक्तवाद दूर–दूर तक यात्रा करता है। मीडिया स्वयं भूमण्डलीकृत होकर सामाजिक सरोकारों से दूर होता जा रहा है। मिडिया स्त्री की यौनिकता और छवि बाजारूढंग से गढ़ने में मशगुल है। प्रकारान्तर से यह एक संकेत मात्र है कि उपभोक्तावादी भूमण्डलीकृत परिदृश्य में देशज संस्कृतियों के डूब जाने का खतरा देखा जा सकता है क्योंकि मानोकल्चर तथा एकरूपीकरण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उपभोक्तावादी अभियान की एक अनिवार्य षर्त है। उपभोक्ता संस्कृति, सम्पूर्णरूप से क्षणभंगुरता, खण्डित, खिराव, विभाजन, उपूकता, असंगतता और विच्छन्नता, आदि को स्वीकारती है। वह न तो इससे परे जाने की कोशिश करती है न ही इसकी प्रतिक्रिया में शाश्वत का विकल्प प्रस्तुत करने की चेष्ट करती है। इस ब्राण्ड संस्कृति में स्त्री अधिक देह–ग्रस्त ले रही है और मल्टीनेशनल कम्पनियों द्वारा प्रस्तुत खांचे में अपने को फिट करने हेतु अपने को ढाल रही है। उसके हर अंग का एक आदर्श आकार और रूप कम्पनियों ने तय किया हुआ है और उसकी सामाजिक स्थिति की प्रमाणिकता का ठेका अनेक ब्राण्डों ने लिया हुआ है। स्त्री किस ब्राण्ड की चूड़ी पहनती है, किस ब्राण्ड का पर्स रखती है, किस ब्राण्ड की लिपिस्टिक लगाती है, इत्यादि उसकी प्रामाणिकता तय करते हैं और अपनी नाक से लेकर पैरों के नाखूनों तक का कृत्रिम रूपान्तरण भी कम्पनियों द्वारा स्थापित ढाँचें में फिट होने के लिए करती है। सवाल है कि उन्हें इस उपभोक्तावादी दौड़ में शामिल करने के लिए क्या पितृसत्ता (जिसे भूमण्डलीकरण ने तोड़ने के बजाय और बजबूत किया है) ही जाल नहीं बिछा रही है? यह अन्ततः भूमण्डलीकरण की सतही आधुनिकता तथा परम्परावादी संस्कृति के गठजोड़ का सवाल है जिसका जबाब एक समाजशास्त्री विवेचना के जरिए ही सम्भव है। इसी विवेचना के जरिए स्त्री के वस्तुकरण की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डाला जा सकता है। ट्रैफिकिंग, बाध्यकारी श्रम, हिंसा, छलावा जो आमतौर पर देह व्यापार की दूरी प्रक्रिया का हिस्सा है, मानव अध्किाार का निर्लज्ज हनन हैं जिसे पितृसत्तात्मक समाज की उस मान्यता से हवा मिलती है जिसके मुताबिक वेश्यावृत्ति इसकी स्वाभाविक संरचना है न कि स्त्री वर्ग के लिए शोषणकारी अवमानना का ज्वलंत प्रभाव। स्त्री के वस्तुकरण के ही संदर्भ में, देह व्यापार में जबरन फंसी गरीब या सामाजिक रूप से परेशान शोषित लड़कियों की बदहाल जिन्दगी तथा व्यापार चलाने वाले पूरे तंत्र को संरक्षण देने वाली सामाजिक राजनीतिक गठजोड़ की विवेचना भूमण्डलीकरण के दौर में औरत की अस्मिता के सही विश्लेषण की एक पूर्वशर्त प्रतीत होती है।

संदर्भः

1. राजोरा, सुरेश चन्द्र : समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएं।
2. बसु : डी.डी.– भारतीय संविधान 2006.
3. महाजन एवं महाजन, भारतीय समाज, मुद्दे एवं समस्याएं।
4. सिन्हा, पी0आर0एन0 एवं इन्दुबाल–श्रम एवं समाज कल्याण।
5. डॉ0 लोहिया–सात क्रान्तियाँ।
6. डॉ0 लोहिया–इतिहास चक्र।